शीर्षक

छायावाद का अर्थ, परिभाषा एवं उसकी विशेषताएँ -

एम० ए० हिंदी (प्रथम वर्ष) द्वितीय समेस्टर
के विद्यार्थीगण हेतु।

व्याख्याता : डॉ० राजीव कुमार वर्मा
सहायक आचार्य (हिन्दी विभाग)
नेहरू ग्राम भारती (डी०यू०) प्रयागराज

छायावाद की समय सीमा क्या है?

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने आधुनिक कविता के तृतीय उत्थान का समय संवत 1975 - अब तक माना है। सन 1918 ई० में ही छायावाद के प्रमुख कवियों ने जैसे- जयशंकर प्रसाद, सुमित्रानन्दन, सूर्य कान्त त्रिपाठी निराला, ने अपनी रचनाएँ लिखनी प्रारम्भ कर दिया था। 1918 ई० में जयशंकर प्रसाद का प्रथम छायावादी काव्य संग्रह 'झरना' प्रकाशित हो चुका था। साथ ही साथ सूर्य कान्त त्रिपाठी निराला की प्रसिद्ध कविता 'जूही की कली' 1916 ई० में प्रकाशित हुई थी। सुमित्रानन्दन पंत के 'पल्लव' (1928) की कुछ कविताएँ 1918 ई० में ही प्रकाशित हो चुकी थी।

जयशंकर प्रसाद की 'कामायनी' 1935 ई० में प्रकाशित हुई तथा प्रगतिशील लेखक संघ की स्थापना 1936 ई० में हुई, इन दोनों बातों को ध्यान में रखकर छायावाद की अन्तिम सीमा 1936 ई० मानना ही उचित है।

छायावाद क्या है ?

रोमैंटिसिज्म :

वह सिद्धान्त जिसके अनुसार अव्यक्त और असात को विषय या लक्ष्य बनाकर उसके प्रति प्रणय, विरह आदि के भाव प्रकट करते हैं।

आधुनिक साहित्य में आत्म अभिव्यक्ति का वह नया ढंग जिसके अनुसार किसी सौंदर्यमय प्रतीक की कल्पना करके ध्वनि, लक्षणा आदि के द्वारा उसके संबंध में अपनी अनुभूति या आंतरिक भाव प्रकट किए जाते हैं।

छायावादी काव्य का जन्म द्विवेदीयुगीन काव्य की प्रतिक्रिया स्वरूप हुआ, क्योंकि द्विवेदी युगीन कविता विषय-निष्ठ, प्रधान और स्थूल थी, जबकि छायावादी कविता व्यक्तिनिष्ठ, कल्पनाप्रधान एवं सूक्ष्म है।

छायावाद का प्रयोग व्यंग्य रूप में उन कविताओं के लिए किया गया जो अस्पष्ट थीं, जिनकी छाया (अर्थ) कहीं और पड़ती थी, किन्तु कालान्तर में यह नाम उन कविताओं के लिए रूढ़ हो गया जिनमें मानव और प्रकृति के सूक्ष्म सौन्दर्य में आध्यात्मिक छाया का भान होता था और वेदना की रहस्यमयी अनुभूति को लाक्षणिक एवं प्रतीकात्मक शैली में अभिव्यंजना की जाती थी।

छायावाद की परिभाषा :

डॉ० नगेन्द्र के अनुसार : "छायावाद स्थूल के प्रति सूक्ष्म का विद्रोह है।"

महादेवी वर्मा के अनुसार : "छायावाद तत्वतः प्रकृति के बीच जीवन का उद्गीथ है। उसका मूल दर्शन सर्वात्मवाद है।"

छायावाद के सन्दर्भ में आचार्य शुक्ल जी का कथन क्या ?

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने छायावाद को 'मधुचर्या' कहा है।

"छायावाद शब्द का प्रयोग दो अर्थों में समझना चाहिए- एक तो रहस्यवाद के अर्थ में जहाँ उसका सम्बंध काव्य वस्तु से होता है, अर्थात् जहाँ कवि अनंत और अज्ञात प्रियतम को आलम्बन मान कर अत्यंत चित्रमयी भाषा में प्रेम की अनेक प्रकार से व्यंजना करता है।

छायावाद का दूसरा प्रयोग काव्यशैली या पद्धति विशेष के व्यापक अर्थ में है।"

जो चिन्तन के क्षेत्र में अद्वैतवाद है वही भावना के क्षेत्र में रहस्यवाद। — आचार्य रामचन्द्र शुक्ल

छायावाद की विशेषताएँ

"प्रेम, प्रकृति और मानव सौन्दर्य की स्वानुभूतिमयी, रहस्यपरक, सूक्ष्म अभिव्यंजना, लाक्षणिक एवं प्रतीकात्मक शैली में जिस काव्य में होती है, उसे छायावाद कहा जाता है।"

भावगत प्रवृत्तियाँ

1. वैयक्तिकता / आत्माभिव्यंजना
2. रूढ़ियों से मुक्ति
3. कल्पना प्रवणता
4. प्रकृति प्रेम / प्रकृति चित्रण
5. सौन्दर्य चित्रण / शृंगार-निरूपण
6. नारी - चित्रण / नारी भावना
7. राष्ट्रीयता
8. करुणा की भावना / दुःख और वेदना की विवृत्ति
9. मानवता

कलागत प्रवृत्तियाँ या शैलीगत प्रवृत्तियां

1. लाक्षणिकता
2. प्रतीकात्मकता
3. अलंकार प्रधान
4. रहस्यवाद
5. ध्वन्यात्मकता
6. गीति काव्य

आत्माभिव्यंजना : छायावादी कवियों ने काव्य की विषयवस्तु अपने व्यक्तिगत जीवन में खोजने का प्रयास किया है। छायावादी कवियों ने अपने स्व को व्यक्त किया है। उन्होंने अपने बाहरी जगत को न देखकर अपने भीतर झांके, दूसरों की बात न कहकर अपने सुख-दुख, आशा-निराशा, मिलन-वियोग की पीड़ा का वर्णन करता है।

करुणा की भावना : महादेवी वर्मा तो वेदना की कवयित्री हैं। वे अपने वेदना विह्वल हृदय की तुलना मेघखण्ड से करती हुई कहती हैं -

"मैं नीर भरी दुःख की बदली"।

नारी भावना : छायावादी कवियों ने नारी को दया, करुणा, प्रेम की देवी माना, अपने इन गुणों के कारण श्रद्धा की पात्र है :

"नारी तुम केवल श्रद्धा हो।"

प्रकृति चित्रण : जयशंकर प्रसाद ने कार्नेलिया के माध्यम से चन्द्रगुप्त नाटक में कहलवाया है -

"अरुण यह मधुमय देश हमारा।"

राष्ट्रीयता : छायावादी काव्य में राष्ट्रीयता के स्वर मुखरित हैं, जैसे - सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला जी माँ सरस्वती से याचना करते हैं कि वर दे, वीणा वादिनी वर दे।